इख़्लास

Post: 01

आमाल का दारोमदार निय्यतों पर

हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ियाल्लाहू अन्हु रिवायत करते हैं कि मै ने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना:

إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ

सिर्फ अमलों (का दारोमदार) निय्यतों पर है!

(Bukhari: 01)

अल्लाह मोमिन के किसी अमल को उसी वक़्त क़ुबूल करेगा जब

1. वो सिर्फ अल्लाह के लिए किया जाए,
2. वो अमल रसूलुल्लाह ﷺ के तरीक़े के मुताबिक़ हो!

दिल और अमल की अहमियत

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियाल्लाहू अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: अल्लाह तआला तुम्हारे जिस्मों और तुम्हारी सूरतों को नहीं देखता,

और लेकिन वो देखता है	وَلٰكِنْ يَنْظُرُ
तुम्हारे दिलों को	إِلٰى قُلُوبِكُمْ
और तुम्हारे अमलों (को)	وَأَعْمَالِكُمْ

(मुस्लिम: 2564)

अल्लाह तआला जिस्म या सूरत को नहीं देखता (क्योंकि उसने उन्हें पैदा किया है)! वह उनके पीछे आमाल और इरादों को देखता है।

इख़्लास
पोस्ट: 03

नेकी का इरादा

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियाल्लाहू अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "पस जिस ने किसी नेकी का इरादा किया लेकिन उसे कर नहीं सका,

अल्लाह तबारका व तआला	كَتَبَهَا اللهُ تَبَارَكَ
लिख लेता है उसे	
अपने पास	وَتَعَالٰى عِنْدَهُ
एक मुकम्मल नेकी,	حَسَنَةً كَامِلَةً

(बुख़ारी: 6491)

हमेशा निय्यत को नेक रखें क्योंकि नेक निय्यत करने पर एक पूरा अज्र मिल जाता है, और उस पर अमल करने पर दस नेकियाँ मिलती हैं!

इआदह (क़ुरआन)

- माँ बाप की खिदमत करके मोमिन जन्नत का हक़दार हो जाता है! (وَصَاحِبْهُمَا فِى الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا)
- माँ बाप चिड़चिड़े हों फिर भी उन के साथ अच्छे से रहिये! (وَصَاحِبْهُمَا فِى الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا)
- हर एक को अच्छे और प्यारे नामों से पुकारिये! (يٰبُنَيَّ---)

इआदह (हदीस)

- अमल को मक़बूल बनाने के लिए अल्लाह की रिज़ा और रसूल ﷺ का तरीका सामने रखिये! (إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ---)
- अपने अमल और निय्यत को अच्छा रखिये, यही दोनों को अल्लाह देखता है! (يَنْظُرُ إِلٰى قُلُوْبِكُمْ و أَعْمَالِكُمْ)
- नेक निय्यत रखने पर एक मुकम्मल अज्र का हक़दार बनिए! (حَسَنَةً كَامِلَةً---)

अल्लाह की राह में कौन?

एक आदमी बहादुरी दिखाने, दूसरा (खानदानी, कबाइली) हमिय्यत और एक तीसरा रियाकारी के लिए लड़ता है, इन में से अल्लाह की राह में लड़ने वाला कौन है? रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

जो शख़्स लड़ता है	مَنْ قَاتَلَ
ताकि हो अल्लाह का कलिमा	لِتَكُوْنَ كَلِمَةُ اللهِ
ही बुलन्द, तो वो	هِيَ الْعُلْيَا، فَهُوَ
अल्लाह के रास्ते में है	فِيْ سَبِيْلِ اللهِ

(Bukhari: 7458)

जो काम इन्सान सिर्फ अल्लाह की रिज़ा के लिए करे तो उसे कभी लोगों की तारीफ व तक्लीफ पर अफ़सोस नहीं होगा और उस का दिल हमेशा मुत्मइन रहेगा!

तौबा की ताकीद

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियाल्लाहू अन्हु से रिवायत है, उन्होंने कहा: मै ने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना:

अल्लाह की क़सम, बेशक मै	وَاللهِ إِنِّىْ
अलबत्ता मै बख्शिश मांगता हूं अल्लाह से	لَأَسْتَغْفِرُ اللهَ
और मै तौबह करता हूं उस की बारगाह में	وَأَتُوْبُ إِلَيْهِ
दिन में ज़्यादा	فِى الْيَوْمِ أَكْثَرَ
सत्तर मर्तबा से	مِنْ سَبْعِيْنَ مَرَّةً

(Bukhari: 6307)

हम से रोज़ाना गलतियाँ होती रहती हैं! इसलिए हम को रोज़ाना तौबह करते रहना चाहिए!

तौबा की तरगीब

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियाल्लाहू अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

वाक़ई अल्लाह बहुत ज़्यादा खुश होता है	لَلّٰهُ أَشَدُّ فَرَحًا
तौबह से अपने बन्दे की	بِتَوْبَةِ عَبْدِهِ

(Bukhari: 6309)

इस दुनिया में कामयाबी और इज़्ज़त उस को मिलती है जिस के अन्दर इन्किसारी होती है और ये इन्किसारी तौबह से ज़्यादा हासिल होती है!

इआदह (क़ुरआन)

- दिमाग खोलने से पहले दिल खोलिए तब नसीहत फ़ायदा देगी! (يٰبُنَيَّ---)
- हिकमत के साथ भलाई का हुक्म दीजिये और बुराई से रोकिये! (وَاْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ)
- भलाई का हुक्म देने और बुराई से रोकने में तक्लीफ पहुंचे तो सब्र कीजिये! (وَاصْبِرْ عَلٰى مَآ اَصَابَكَ)

इआदह (हदीस)

- जो काम इन्सान सिर्फ अल्लाह की रिज़ा के लिए करे उस का शुमार अल्लाह की राह में होगा! (فَهُوَ فِىْ سَبِيْلِ اللهِ)
- हम से रोज़ाना गलतियाँ होती रहती हैं, इसलिए हम को रोज़ाना तौबा करते रहना चाहिए! (وَاللهِ اِنِّىْ لَأَسْتَغْفِرُ اللهَ ---)
- इस दुनिया में कामयाबी और इज़्ज़त उस को मिलती है जिस के अन्दर इन्किसारी होती है!(لَلّٰهُ أَشَدُّ فَرَحًا ---)

नज़अ के वक़्त तौबा

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर बिन ख़त्ताब रज़ियाल्लाहू अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया:

बेशक अल्लाह अज्ज़ा व जल्ला	إِنَّ اللهَ عَزَّ وَجَلَّ
क़ुबूल फरमाता है तौबा बन्दे की	يَقْبَلُ تَوْبَةَ الْعَبْدِ
जब तक वो नज़अ की हालत में ना हो	مَا لَمْ يُغَرْغِرْ

(Bukhari: 6309)

मौत एक अटल हक़ीक़त है सो इन्सान को हर वक़्त मौत की तय्यारी रखनी है! और वो है गुनाहों से पाकी, जिस का तरीका तौबा है!

माल की लालच

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियाल्लाहू अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

अगर हो इंसान के पास	لَوْ كَانَ لِابْنِ اٰدَمَ
एक वादी सोने की	وَادِيًا مِنْ ذَهَبٍ
(तो) वो चाहेगा कि हों	أَحَبَّ أَنْ يَّكُوْنَ
उस के पास दो वादियाँ	لَهُ وَادِيَانِ

(Bukhari: 6439)

ख्वाहिशात और हिर्स इन्सान को आख़िरत से गाफिल कर देती हैं, इसलिए अल्लाह की तरफ हर वक़्त तौबा करने की ज़रूरत है!

सब्र की ताक़त

हज़रत हारिस बिन आसिम अशअरी रज़ियाल्लाहू अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

और सब्र रौशनी है,	وَالصَّبْرُ ضِيَاءٌ

(Bukhari: 6436)

सब्र एक रौशनी है जिस से इन्सान को क़दम क़दम पर जमे रहने की रहनुमाई मिलती है!

इआदह (क़ुरआन)

- गाल मत फुला यानी मत अकड़, चाहे सामने वाला मज़दूर ही क्यों ना हो! (وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ)
- राई के दाने के बराबर तकब्बुर वाला जन्नत में नहीं दाख़िल होगा! (وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ)
- इतरा कर चलने वाला अल्लाह के नज़दीक नापसंदीदा है और इंसानों के नज़दीक भी! (وَلَا تَمْشِ فِى الْأَرْضِ مَرَحًا)

इआदह (हदीस)

- इन्सान को हर वक़्त मौत की तय्यारी रखनी है! और वो है गुनाहों से पाकी, जिस का तरीका तौबा है! (اِنَّ اللهَ عَزَّ وَجَلَّ يَقْبَلُ تَوْبَةَ الْعَبْدِ---)
- ख्वाहिशात और हिर्स के पीछे ना भागो क्योंकि उन की इन्तिहा नहीं है! (أَحَبَّ أَنْ يَّكُوْنَ لَهُ وَادِيَانِ)
- सब्र से मदद हासिल कीजिये! (وَالصَّبْرُ ضِيَاءٌ)

सब्र की अहमियत (1)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियाल्लाहू अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

और जो सब्र का दामन पकड़ता है	وَمَنْ يَّتَصَبَّرْ
अल्लाह उसे सब्र की तौफीक़ दे देता है	يُصَبِّرْهُ اللّٰهُ

(Bukhari: 1469)

सब्र अल्लाह तआला की ऐसी नेअमत है जो इन्सान को बुरे लोगों के आगे गिरने ही नहीं देती!

सब्र की अहमियत (2)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियाल्लाहू अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

और जो सब्र का दामन पकड़ता है	وَمَنْ يَّتَصَبَّرْ
अल्लाह उसे सब्र की तौफीक़ दे देता है	يُصَبِّرْهُ اللّٰهُ

(Bukhari: 1469)

सब्र के ज़रिये इन्सान नेक काम पर डटा रहता है, बुरे कामों से रुकता है, और मुश्किलात में नहीं हारता!

ख़ुशहाली पर शुक्र

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियाल्लाहू अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

إِنْ أَصَابَتْهُ سَرَّاءُ	अगर उसे ख़ुशहाली नसीब हो
شَكَرَ	तो (उस पर अल्लाह का) शुक्र करता है
فَكَانَ خَيْرًا لَهُ	तो ये (शुक्र करना) उस के लिए बेहतर है

(Muslim: 2999)

मोमिन को ख़ुशहाली मिलती है तो शुक्र करता है यानी उस ख़ुशहाली को वो इबादत, सदक़ा, खैरात के लिए इस्तेमाल करता है, और इस तरह मजीद नेकियाँ कमाता है!

इआदह (क़ुरआन)

- ना बिल्कुल मर्यल चाल चलिए और ना अकड़ की बल्कि शराफत वाली चाल हो! (وَاقْصِدْ فِيْ مَشْيِكَ)
- हक़ बात कहने के लिए ऊँची आवाज़ की ज़रूरत नहीं होती! (وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ)
- गुस्से के वक़्त नीची आवाज़ से बात करने से गुस्से को कंट्रोल करने में मदद मिलती है! (وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ)

इआदह (हदीस)

- सब्र इन्सान को बुरे लोगों के आगे गिरने ही नहीं देता! (وَمَنْ يَّتَصَبَّرْ يُصَبِّرْهُ اللهُ)
- सब्र के ज़रिये इन्सान मुश्किलात में नहीं हारता! (وَمَنْ يَّتَصَبَّرْ يُصَبِّرْهُ اللهُ)
- मोमिन अपनी ख़ुशहाली को इबादत, सदक़ा, खैरात के लिए इस्तेमाल करता है! (إِنْ أَصَابَتْهُ سَرَّاءُ شَكَرَ)